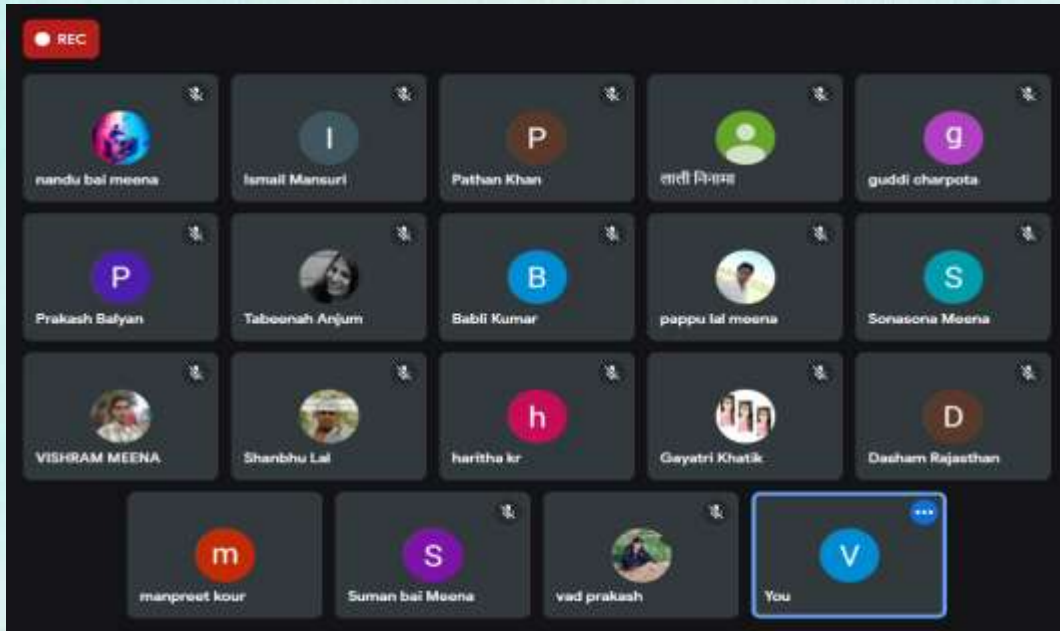


# मेरी रचना कितनी सुन्दर

अंक 3, सितम्बर 2021



रिसोर्स इन्स्टीट्यूट फॉर ह्यूमन राइट्स, राजस्थान

## संदर्भ व्यक्ति व मुख्य प्रशिक्षक

डॉ. तबीनाह अंजुम कुरैशी (सीनियर जर्नलिस्ट आउटलुक पत्रिका)

## मार्गदर्शन एवं परिकल्पना

अंकुश सिंह, यूनिसेफ, राजस्थान

मनीष सिंह, मंजरी संस्थान, बूंदी

विजय गोयल, रिसर्च इंस्टिट्यूट फॉर ह्यूमन राइट्स (आर.आई.एच.आर.)

## संपादक

सुशीला ओझा

अध्यक्ष, उरमूल सीमान्त समिति बज्जू, बीकानेर

## सहयोग

अरूण दीक्षित	-	दूसरा दशक बाली
सुनीता शर्मा	-	दूसरा दशक बस्सी
विजय मेहता	-	दूसरा दशक भंवरगढ़
रजनी शर्मा	-	दूसरा दशक देसुरी
सुलेमान कोख	-	ग्रामीण मानव कल्याण शिक्षण संस्थान
सूरज सिंह	-	डेजर्ट रिसोर्स सेन्टर, बीकानेर
लता सिंह	-	स्नेह आंगन

## विश्लेषण एवं लेखन

कौमुदी - दशम एलाइंस

(साथ में विभिन्न संस्थाओं के बच्चे)


## प्रकाशन

दशम एलाइंस के द्वारा यूनिसेफ के सहयोग से

आर.आई.एच.आर.के माध्यम से प्रसारित

## ग्राफिक डिजाईनर

आयुष कम्प्यूटर्स एण्ड टाइपिंग इंस्टिट्यूट

 9414941489, 8890870215

## भूमिका

देश में कोरोना महामारी के दौरान सभी के मन में उठने वाले सवालों में से एक प्रमुख सवाल बच्चों की शिक्षा का रहा। शिक्षा में आई रूकावट ने बच्चों को कई प्रकार से प्रभावित किया। इस दौरान बच्चे सीखने-सिखाने के अवसरों से वंचित रहे। उनमें विद्यालय परिसर से दूर रहने के कारण उदासीनता के भाव आने लगे। विद्यालय परिसर से दूर होने के कारण वो दोस्त, खेलना, सीखने की प्रक्रिया आदि से भी दूर हो गए।

इस समस्या को समझते हुए यूनिसेफ और दशम एलाइंस के साथियों की राय और डॉ तबीनाह अंजुम के सुझाव पर पांच कार्यशालाएं प्रस्तावित की गयी। इन कार्यशालाओं के माध्यम से बच्चों को नई सीख देने के उद्देश्य से फोटोग्राफी व चित्र लेखन कार्य करवाया गया।

बच्चों की दोस्त बनी डॉ तबीनाह अंजुम ने बेहद रोचक और दोस्ताना तरीकों से बच्चों को डिजिटल माध्यम से रचनात्मक लेखन, मोबाइल फोन से फोटोग्राफी, कहानी लेखन को लेकर प्रशिक्षण दिया। उन्होंने बच्चों को लिखने और पढ़ने के लिए प्रेरित किया।

बच्चों में हमेशा से सीखने और विकास की प्रक्रिया स्वाभाविक रही है। इन कार्यशालाओं में बच्चों के लिए अपने आस-पास के वातावरण को देखना, उसे अनुभव करना और उसको फोटोग्राफी और कहानी के माध्यम से प्रस्तुत करना मजेदार रहा।

तबीनाह द्वारा इन पांच दिनों की कार्यशाला के दौरान बच्चों को तस्वीरों से कहानी बनाना, तस्वीरें लेना, और तस्वीर में अलग-अलग प्रकारों को दिखाना, फोटोग्राफी का इतिहास, कैमरे और फोटोग्राफी से जुड़ी बुनियादी बातों के बारे में बताया गया। बच्चों ने प्रकाश, साइड लाइट, बैक लाइट, लिडिंग लाइन, पैटर्न, तिहाई का नियम का उपयोग कर तस्वीरों को रोचक

बनाना आदि के बारे में जाना। इस कार्यशाला में बच्चों को सिर्फ तस्वीर लेना ही नहीं बल्कि हर एक तस्वीर के पीछे की कहानी को पहचानना सिखाया गया।

इस कार्यशाला में 17 जिलों के 22 संस्थाओं के 187 बच्चों ने हिस्सा लिया। इनमें 15 बच्चे ऐसे थे जिनके एक या दो सत्र छूट गये लेकिन उन्होंने अन्य सत्रों में जुड़कर सीखने की प्रक्रिया को जारी रखा। कार्यशाला में सिखाये गये तरीकों को बच्चों ने बखूबी अपनी कविता, कहानियों और तस्वीरों के माध्यम से दिखाया। इस पांच दिवसीय कार्यशाला को बच्चों द्वारा खूब सराहा गया।

डॉ. तबीनाह अंजुम ने फोटोग्राफी और लेखन की कार्यशाला को बड़े सरल और सहज रूप से सम्पन्न करवाया। कार्यशाला को आयोजित करने का मूल उद्देश्य बच्चों को ऐसी अभिव्यक्ति प्रदान करना था जिसमें वे रोचक तरीके से अपनी भावनाएं और विचार व्यक्त कर सकें और संचार के नए कौशल सीख सकें। इसमें हम सफल भी रहे।

इस अंक में पहली, दूसरी व तीसरी कार्यशाला के दौरान बच्चों द्वारा लिखी गई कहानी व कविताएं तथा फोटोग्राफ प्रस्तुत किये जा रहे हैं। यदि पाठक अपनी प्रतिक्रियाएं भेजेंगे तो खुशी होगी।

✍ कौमुदी, दशम एलाइंस

## संपादक की कलम से

कोरोना काल में जब बच्चे सभी प्रकार की विद्यालयी गतिविधियों से दूर ऑनलाइन कक्षाओं तक सिमट कर रहे गए थे और उनकी रचनात्मकता खत्म होती जा रही थी। उस समय में इस प्रकार की गतिविधियां बच्चों को रुचिकर ढंग से रचनात्मक गतिविधियों से जोड़े रखने के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। यह इस दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है कि इस पत्रिका ने बच्चों को उनकी रचनात्मक अभिव्यक्ति के लिए एक मंच प्रदान किया जहां बच्चे अपनी अभिव्यक्तियों को प्रस्तुत कर सकते हैं फिर चाहे वो कविता के माध्यम से हो, कहानी के माध्यम से हो या फोटोग्राफी के। यह एक प्रकार से कोरोना काल के प्रभावों और अनुभवों की अभिव्यक्ति है जिसे इन रचनाकारों ने बेहद कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है।

इस प्रकार की गतिविधियों को निरंतर आगे करते रहने की आवश्यकता है क्योंकि इस प्रकार की कार्यशालाएं बच्चों के रचनात्मक कौशल को निखारने का काम करती हैं और बच्चों को प्रोत्साहन देती हैं।

एक नवीन रचनाकार जब अपनी रचना को कहीं प्रकाशित रूप में देखता है तो उसमें भी अपनी लेखनी को लेकर एक आत्मविश्वास जगता है और यह आत्मविश्वास उस वक्त और भी बढ़ जाता है जब उसकी रचना को पाठकों द्वारा सराहा जाता है। इसलिए इन नवीन रचनाकारों के लिए इस तरह के प्रयास बेहद महत्वपूर्ण और सराहनीय है।

✍ सुशीला ओझा

## विषय सूची

शीर्षक	लेखक	पेज नं०
उड़ान पर पाबंदी	रेनुका भाटी	1
कोरोना का जीवन पर असर	हिमांशु तंवर	2
प्रकृति का नियम	हरिओम बैरवा	3
ढलती हुई शाम	नरेन्द्र पिंगोलिया	4
परिवार की जीत	खुशबु यादव	5
कोरोना पर जीत	इरफान शेख	6
बेरोजगारी	ज्योति पिंगोलिया	7
मेरा प्यारा घर	मिताली राज सोनी	8
कोरोना और जीवन साथी	मुस्कान शेख	9
सच की राह पर चलो साथियों	टीना वर्मा	10
स्केटर जीनी	अक्षिता	11
मेरे अनुभव	प्रभजय नागरवाल	12
एक झलक	विकाश बैरवा	13
कोरोना और लॉकडाउन का हमारे जीवन पर प्रभाव		24
दूसरे अंक के प्रसारित होने के साथ बच्चों और सहयोगी संस्थाओं की प्रतिक्रियाएँ		25
प्रतिभागी बच्चों की सूची		26
कार्यशाला में जुड़ी सहयोगी संस्थाओं का परिचय		27

## उड़ान पर पाबंदी



मीना को खेलना, पढ़ना और घूमना अच्छा लगता था, लेकिन उसे घर में यह सब करने की मनाही थी। मीना के माता-पिता उसे घर से बाहर नहीं जाने देते थे क्योंकि उनका मानना था कि लड़कियों को घर पर ही रहना चाहिए और घर का सारा काम करना चाहिए। मीना बहुत दुखी रहती थी और विद्यालय जाती अपनी सहेलियों को देखा

करती। मीना का जीवन घर की चार दीवारी में बन्द हो कर रह गया था। उसे इस बात का बुरा लगता था कि वो उन सभी की तरह खेल, पढ़ नहीं सकती। वो अपनी खिड़की से रोजाना बाहर देखती और मन ही मन में कहती, काश! मैं भी बाहर जा पाती...।

कई गाँवों में आज भी लड़कियों को घर पर ही रहकर घर का काम करने के लिए बाध्य किया जाता है। जिससे लड़कियां जीवन की कई सारी संभावनाओं से वंचित रह जाती हैं।

मीना खिड़की के बाहर की दुनिया देखना चाहती है और कुछ इस तरह से ये तस्वीर इस कहानी को दर्शा रही है।



रेनुका भाटी  
कक्षा बी.ए. (प्रथम वर्ष)

## कोरोना का जीवन पर असर

कोरोना महामारी ने जग में ला दिया भूचाल,  
इससे जन-जीवन हो गया बेहाल।

इंसान ने इंसान से दूरी बना ली,  
देखा कोरोना का यह कमाल।

जीवन की रक्षा के लिये दूरी है जरूरी,  
नहीं हमको इसका ख्याल।

मास्क पहनना, साबुन संग हाथ को धोना,  
जिससे जीवन हो खुशहाल।

सैनेटाईज करना, दो गज दूरी रखना,  
यही है जीवन की सच्ची देखभाल।

सरकारी गाईडलाइन का पालन है करना,  
जिससे जीवन में हो खुशियों का धमाल।

बिना काम के घर से बाहर न जाना,  
जिससे जीवन में न आये कोई बवाल।

वैज्ञानिकों के प्रयास से बनी देखो,  
जीवन रक्षक वैक्सीन बेमिसाल।

कोरोना को भगाना है तो इन सबको अपनाना है,  
जिससे जीवन खुशियों से हो मालामाल।



✍ हिमांशु तंवर, कक्षा 12



## प्रकृति का नियम



एक शिक्षक अपने विद्यार्थियों को प्रकृति के नियमों की प्रयोगात्मक शिक्षा देने के लिए विद्यालय की लेब में लेकर जाता है। सभी विद्यार्थी बड़ी उत्सुकता के साथ इस प्रयोग में भाग लेते हैं।

उस लेब में शिक्षक ने तितली के दो छोटे-छोटे अंडे रखे थे। जिनमें से कुछ ही समय में बच्चे बाहर निकलने वाले थे। उन अंडों के अंदर के बच्चों की सारी हलचल वहां लगे कम्प्यूटर पर दिखाई दे रही थी, जिसमें तितली के बच्चे अंडे से धीरे-धीरे बाहर आते हैं। उनमें से एक तितली पंख हिलाने का प्रयास करती है पर उड़ नहीं पाती और दूसरी तितली कुछ ही देर में इधर-उधर उड़ना शुरू कर देती है। सभी बच्चे उसे देखकर बड़े खुश हो जाते हैं।

शिक्षक विद्यार्थियों को समझाता है- संघर्ष प्रकृति का नियम है। जब भी कोई जीव या व्यक्ति संघर्ष करता है, तो उसके अंदर छुपे हुए बहुत से गुण निखरकर बाहर आ जाते हैं। वह बताते हैं कि पहले वाला बच्चा अंडे से जल्दी और आसानी से बाहर आ गया इसलिए उसमें बाहर के माहौल में जीने के गुणों का विकास नहीं हो पाया। जबकि दूसरे बच्चे ने संघर्ष किया और अपने आपको इतना मजबूत बना लिया कि वह बाहर की दुनिया में जी पाए।

सीख - जरूरत से ज्यादा मदद हमें हमेशा के लिए उन गुणों से दूर कर देती है, जो हमारे अंदर है। यही प्रकृति का नियम है।

✍ हरिओम बैरवा  
बी.ए. (तृतीय वर्ष)

## ढलती हुई शाम

कुछ बयां करती है ये ढलती हुई शाम,  
पंछी लौटते हैं अपने आशियानों में।  
अपने नन्हे चूजों के लिए दाना-पानी लिए,  
मजदूर लौटते हैं अपने घरों के लिए।  
दिन भर की मेहनत की थकान लिए,  
चरवाहे लौटते हैं अपनी गायों को लिए।  
मुसाफिर/राहगीर फिरते हैं अपने,  
आश्रय की उम्मीद के लिए।



आसमान में छा जाती है लालिमा,  
मानो किसी ने बिखेर दिया हो सिंदूर-सा आसमान में  
सूरज भी जाने लगता है अपने गंतव्य की ओर।

आशाओं से भरी होती है, ढलती हुई शाम,  
मन में नया उत्साह जगाती है, ढलती हुई शाम,  
सदैव बढ़ते रहने का पथ दिखाती है, ढलती हुई शाम,  
काफी कुछ सिखा जाती है, एक ढलती हुई शाम।

✍ नरेन्द्र पिंगोलिया, कक्षा 12

## परिवार की जीत

एक शहर में एक संयुक्त परिवार रहता था और सभी के अंदर एक दूसरे के लिए प्रेम था। उस संयुक्त परिवार में एक दादू दयाल नाम का व्यक्ति एवं उसकी पत्नी लक्ष्मी और उसके तीन बेटे रहते थे। उनके बेटे बड़े हो गये और सभी की अच्छी नौकरी लग गयी।

जैसे-जैसे वक्त बीतता गया वे थोड़े और बड़े हुए और अब उनके माता-पिता को उनकी शादी की फिक्र होने लगी और फिर कुछ समय बाद में उनकी शादी भी हो गई और उनके भी बच्चे हो गये। पूरा परिवार खुश था लेकिन उनके बेटे देश-विदेश में नौकरी करते थे वे घर से दूर रहते इसलिए उनके माता-पिता थोड़े से अकेले दुखी रहते थे, लेकिन फिर अचानक पता चला कि पूरी दुनिया में एक महामारी आयी है और हो सकता है कि हमारे देश में लॉकडाउन लग जाये तब उनके माता-पिता ने उन सभी को घर बुलाया।

जैसे ही वे घर पहुंचे तो देखा कि माँ लाल ओढ़नी व लहंगा पहने चारपाई पर उनका इंतजार कर रही है और उनके पिता जी भी पहले की तरह अपने पोते-पोतियों के साथ खेलने के लिए खिलौने निकाल रहे थे। वे सभी बहुत खुश हो गये थे, लेकिन किसे पता कि उनकी मुस्कान जल्द ही एक कठोर संघर्ष में बदल जाएगी।

दादू दयाल की पत्नी लक्ष्मी का स्वास्थ्य अचानक खराब हो गया। सभी बहुत परेशान हो गये। कई हफ्तों तक पूरा परिवार लक्ष्मी की सेवा करता रहा। धीरे-धीरे लक्ष्मी की सेहत में सुधार दिखने लगा। सभी चीजें ठीक हो गयी और दादू दयाल का परिवार फिर से खुशहाल रहने लगा। दादू दयाल के परिवार ने मिलकर कोरोना महामारी से जीत हासिल की।



✍️ खुशबू यादव, कक्षा 11

## कोरोना पर जीत

मिलकर कोरोना को हराना है,  
मिलकर कोरोना को हराना है।  
घर से बाहर कहीं नहीं जाना है,  
हाथ किसी से नहीं मिलाना है,  
चेहरे के हाथ नहीं लगाना है,  
मिलकर कोरोना को हराना है।



बार-बार अच्छे से हाथ धोना है,  
सेनेटाइज करके देश को स्वस्थ बनाना है,  
बचाव ही इलाज है, यह समझाना है,  
मिलकर कोरोना को हराना है।

कोरोना से हमको नहीं घबराना है,  
सावधानी रखकर, कोरोना को मिटाना है,  
देशहित में सभी को यह कदम उठाना है,  
मिलकर कोरोना को हराना है।

✍ इरफान शेख, कक्षा 10

## बेरोजगारी



यह कहानी रामपुरा गांव के एक गरीब परिवार की है। उस परिवार में मुखिया रामू और कुल सात सदस्य रहते हैं। रामू के चार बच्चे हैं - तीन बेटे, एक बेटी, एक बूढ़ी मां व रामू व उसकी पत्नी। रामू की उम्र करीब चालीस वर्ष है। वह दिहाड़ी मजदूरी करता है और उस मजदूरी से अपने घर का खर्च, बच्चों के स्कूल की फीस व बूढ़ी मां की दवाइयों का खर्चा भी चलाता है।

करीब बीस साल से रामू व उसकी पत्नी मजदूरी करके अपना घर चला रहे थे। बीस साल बाद रामू के तीनों बेटे बड़े हो गए और वे आगे की पढ़ाई करना चाह रहे थे। रामू अपने बच्चों के सपनों के लिए घर व गांव को छोड़कर शहर में मजदूरी करने लगा।

अब रामू के घर में रामू की मां, उसकी पत्नी व उसके चारों बच्चे रह रहे थे। शहर जाने के एक साल बाद तक रामू अपनी मजदूरी से हुई आय को गांव

भेजता रहा जिससे उसके परिवार के लोग जीवनयापन कर सके। सब कुछ थोड़ा ठीक-ठाक चल रहा था, लेकिन नियति को कुछ और ही मंजूर था। तभी हमारे देश में कोरोना नामक बीमारी पैर जमाने लगी और पूरे देश में सम्पूर्ण लॉकडाउन लगाने की घोषणा कर दी गई।

उस समय जो लोग जहां थे वे लोग वहीं फंसे रह गये। इनमें रामू का भी यही हाल था, लेकिन रामू बेचारा क्या करता? उसे अपने परिवार की चिंता थी। रामू ने आव देखा ना ताव दिन-रात सड़कों पर पैदल चलकर किसी तरह वह गांव पहुंच गया।

जब रामू घर आया तो उसे पता चला कि उसके घर में खाने के लिए कुछ भी नहीं था। फिर भी गांव के लोगों ने आशा, भामाशाह की मदद से उसके परिवार के लिए खाद्य सामग्री व दोनों समय के खाने का इंतजाम कर दिया। कोरोना काल को देखते हुए रामू को एक साल बीत गया और जब फिर से देश में लॉकडाउन खुलने लगा तो रामू व उसकी पत्नी मजदूरी करने लगे। रामू व उसकी पत्नी कड़ी धूप में मजदूरी करके जैसे-तैसे अपने परिवार की गाड़ी पटरी पर लाने लगे और रामू ने किसी तरह अपने बड़े बेटे की पढ़ाई पूरी करवाई फिर बड़े बेटे ने अपने तीनों छोटे भाइयों और बहन को पढ़ाया और उनके सपनों को पंख देने की कोशिश में लग गया। वर्तमान में रामू का बेटा नेटवर्किंग मार्केट में बिजनेस करता है और छोटे भाई-बहन पढ़ाई कर रहे हैं।

✍ ज्योति पिंगोलिया  
कक्षा बी.कॉम (द्वितीय वर्ष)

## मेरा प्यारा घर

मेरा प्यारा घर,

जग से न्यारा मेरा घर।

जहां सुख मिलता सारा,

वह है प्यारा घर हमारा।

जब हम जाते घर से दूर,

घर जल्दी जाने को मजबूर।

घर में रौनक है छा जाती,

जब घर पर बुआ है आती।

नाना मौसी के साथ,

मौज करते दिन-रात।

भाई बहनों का प्यारा बंधन,

अपने घर को करता सुंदर।

आपस में टकरार भी,

घर है पहचान प्यार की।

त्यौहार पर देखो मेरा घर,

लगता है परियों सा घर।

मां का प्यार, पिता का दुलार,

देता हमें जीने का आधार।

सारे जग से न्यारा घर,

मेरा प्यारा प्यारा घर।



✍ मिताली राज सोनी, कक्षा 11

## कोरोना और जीवन साथी



एक गांव में एक वृद्ध आदमी अनूपचर और उसकी पत्नी राजकुमारी एक साथ रहती थी। एक दिन उसकी पत्नी को अचानक चक्कर आ गया। तब अनूपचर ने उसके सिर पर हाथ लगाया तो पता चला कि उसे बहुत तेज बुखार है। अनूपचर ने उसके सिर पर गीली पट्टी लगायी। फिर भी उसे आराम नहीं मिला।

फिर कुछ देर बाद रामकुमारी की सांस बढ़ने लगी और वह जोर-जोर से खांसने लगी। अनूपचर रामकुमारी को अस्पताल ले गया और उसे गेट के बाहर पर रखे तख्ते पर लिटा दिया। फिर वह डॉक्टर के पास गया और बोला डॉक्टर साहब मेरी पत्नी को बुखार हो गया है, आप इसे बेड दे

दीजिए। शुरुआत में डॉक्टर ने उसे बेड देने से मना कर दिया, लेकिन बाद में अनूपचर डॉक्टर को मना कर ले आया।

डॉक्टर ने उसके लिए बेड की व्यवस्था की और बेड पर लिटा दिया। अचानक उसकी पत्नी ने आंखे बंद कर ली। डॉक्टर ने उसकी जाँच की लेकिन तब तक राजकुमारी की मृत्यु हो चुकी थी। अनूपचर रोने लगा कोई भी उसे संभालने या उसकी पत्नी के शव को उठाने के लिए आगे नहीं आया। फिर वह अपनी पत्नी रामकुमारी को किसी तरह साइकिल पर बैठाकर श्मशान घाट की ओर चल पड़ा। अनूपचर की सांस बढ़ने लगी और वह साइकिल से नीचे गिर गया। वहां पास में ही खड़ी पुलिस उसके पास आयी और अनूपचर ने अपनी सारी बात पुलिस को बताई। पुलिस अनूपचर की मदद के लिए तैयार हो गई और उन्होंने अनूपचर की पत्नी का अंतिम संस्कार कराया। अनूपचर के उस कठिन समय में पुलिस ने उसका साथ दिया।

**सीख - हमें किसी के दुख को नजरअन्दाज नहीं करना चाहिए।**



## सच की राह पर चलो साथियों

सच की राह पर चलो साथियों, कभी नहीं घबराना है,

सबके मन में सकारात्मकता को जगाना है।

सच्चाई की हमेशा जीत हुई, ये हमें कभी भी नहीं भुलाना है।

सच की राह पर चलो साथियों, कभी नहीं घबराना है।



झूठ का रास्ता जिसने भी अपनाया, कभी नहीं सुख से रह पाया है।

सच की राह पर चलो साथियों, कभी नहीं घबराना है।

सदाचार जिसने अपनाया, बुलंदियों को उसने पाया है।

सच की राह पर चलो साथियों, कभी नहीं घबराना है।

रोंदो ना जीवन अब अपना, कुछ आगे करके है दिखाना।

सच की राह पर चलो साथियों कभी नहीं घबराना है।

सद्गुण को जिसने अपनाया, वीरता को है उसने पाया।

सच की राह पर चलो साथियों, कभी नहीं घबराना है।

नकारात्मकता को दूर भगाना है, देश में सफलता का उजाला लाना है।

देश को सफल बनाना है, सबके मन में सकारात्मकता को जगाना है।

सच की राह पर चलो साथियों, कभी नहीं घबराना है।

✍ टीना वर्मा, कक्षा 10



## स्केटर जीनी



जीनी एक होनहार और उर्जा से भरी लड़की है जिसे स्केटिंग और रोल बॉल खेलना बहुत पसंद है। पिछले तीन सालों में उसने कई टूर्नामेंट खेले और जीते। लोगों ने भी उसे बहुत प्यार दिया। लेकिन फिर आया रियल लाइफ विलन कोरोना... पूरे देश, शहर और गाँव की गलियाँ सूनी पड़ गईं। जहाँ वो रोज सुबह-शाम अभ्यास करती उस स्टेडियम

में भी उसे अभ्यास करने से मना कर दिया गया।

अब वो घर में अपने मेडल, स्केट्स और बॉल को देखकर वह उन दिनों को याद करती जब वह अपने दोस्तों के साथ खेलती थी। रोज शाम 4 बजे, भले ही उस वक्त कड़कती धूप हो या जमा देने वाली ठंड, जीनी स्टेडियम जरूर जाती। अपने दोस्तों के साथ बातें करती और खूब खेलती।

पूरा एक साल ऐसे ही निकल गया। वो हर दिन ये सोचकर सोती कि हो सकता है कल ये सब



खत्म हो। अगले दिन वो नींद में अपनी मम्मी की आवाज सुनती है- जीनी जल्दी नाश्ता कर स्टेडियम निकलना है, वह खुशी से पागल सी हो जाती है लेकिन तभी उसे एक और आवाज सुनाई देती - जीनी उठ जा बेटा, आज पोंछा लगाने की बारी तेरी है।

(यह कहानी इस तस्वीर पर लिखी गयी)

✍ अक्षिता, कक्षा 8

## मेरे अनुभव



कोरोनाकाल में लोगों को अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ा और कोरोना महामारी से सीखने को भी बहुत कुछ मिला है। इस महामारी से फायदे तो नहीं हुए हैं, लेकिन इसने लोगों को जीवन जीने के लिए अनेक प्रकार की सीख दी है। जीवन जीने के लिए ज्यादा पैसों की जरूरत नहीं है। जीवन जीने के लिए दो समय का भोजन ही पर्याप्त है।

कोरोना महामारी में अनेक प्रकार के फालतू खर्चों पर रोक लगी। जिससे लोगों को बचत का रास्ता मिला, जो आगे भविष्य में उनके काम आएगा। इस महामारी के कारण स्वयं को सुरक्षित रखने के भी उपाय मिले हैं जो स्वयं, परिवार व दूसरे परिजनों के जीवन के लिए लाभदायक हैं। इसके अलावा इस महामारी में लोगों को मदद या सेवा का मौका मिला। इसका निष्कर्ष यह है कि हमें अपने से आर्थिक कमजोर लोगों को निस्वार्थ भाव से मदद करनी चाहिए जिससे उन लोगों को इस परिस्थिति से लड़ने व बचने का सहारा मिले और उनके चेहरे पर खुशी आए तथा देशवासियों में प्रेम भाव बढ़े।

कोरोना महामारी में लोगों को कई प्रकार के नुकसान भी हुए चाहे वे आर्थिक हों या मानसिक। कोरोना महामारी ने लोगों को अंदर कठोर बना दिया। इसने लोगों को बेसहारा व बच्चों को अनाथ बना दिया, जिससे उनके जीवन व भविष्य पर बहुत गहरा संकट आ गया। इस संकट काल में कई लोगों ने सहायता करने के बजाय अनेक प्रकार की जरूरतमंद वस्तुओं जैसे दवाइयां, भोजन की कालाबाजारी का रास्ता अपनाया, जिससे लोगों व देश को बहुत ही नुकसान हुआ।

कोरोना महामारी में बच्चों के भविष्य के साथ भी बहुत ही बड़ा खिलवाड़ हुआ। विद्यार्थियों को बिना परीक्षा के पास करने से उनकी शिक्षा का स्तर बहुत खराब होगा जो उनके लिए आगे वाली कक्षा और जीवन में बहुत ही नुकसानदायक साबित होगा।

कोरोना महामारी में लोगों से उनके रोजगार भी छीन लिये। बेरोजगारी की वजह से कई लोगों को सुबह-शाम का भोजन भी नहीं मिल पाता। इस महामारी से बचने या इससे लड़ने के लिए हमें धैर्य रखना होगा तथा एक दूसरे की मदद करनी होगी। कोरोना महामारी से स्वयं बचे तथा दूसरों को भी बचाएं।



प्रभजय नागरवाल  
कक्षा बी.एस.सी. (द्वितीय वर्ष)

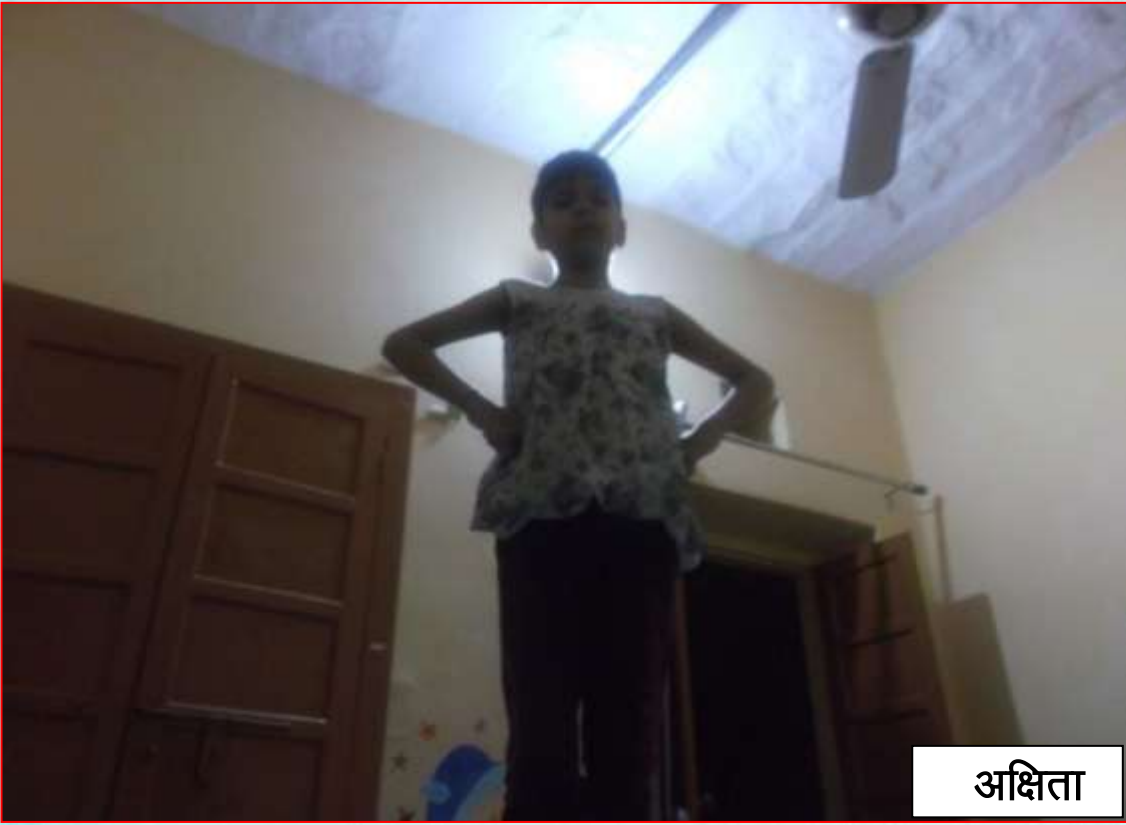
## एक झलक



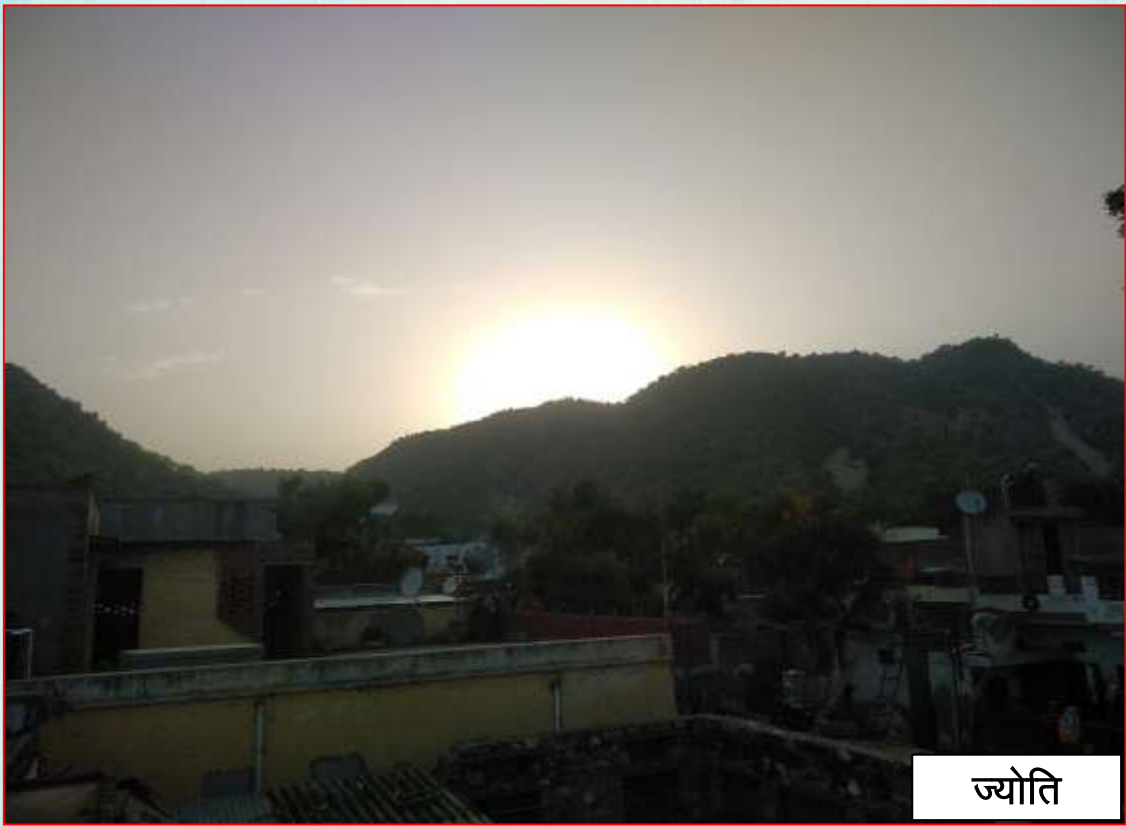
एक बार की बात है मैं कहीं घूमने गया हुआ था हमने वहां पर कई सारी चीजें और नजारे देखे। वह काफी मनोरम पल था जिस वक्त मेरी नजर उस बड़े से लकड़ी के बने दरवाजे के बाहर पड़ी। वहां पर घूमने वालों के लिए एक लम्बा चौड़ा सड़कनुमा रास्ता बनाया हुआ था। वहाँ विश्राम के लिए बडी-सी कुर्सी भी लगाई गई थी। आसमान में खाली सफेद बादलों को चीरकर आती सूरज की किरणों मेरे मन को आकर्षित कर रही थी।

सुबह का समय था, मौसम ठंडा और सुहाना था। वहां बंदर भी उस मौसम का लुत्फ उठा रहे थे। कभी एक जगह बैठकर कुछ देखते तो कभी ऊंची-ऊची छलांगे मारते हुए वहां से भाग जाते। वहां जो भी घूमने आता अपना सारा खाने-पीने का सामान साथ में लाता। उस आगे वाली बेंच पर कोई अपना बैग भूलकर चला गया था। अब धीरे-धीरे दिन चढ़ रहा था और वह मन को मोहने वाला भ्रम बादलों में से निकलते सूरज के सामने झुकने लगा था। पेड़ अपने पत्तों को फैलाकर इसकी शुरुआत कर रहे थे। मुझे वो एक झलक आज भी उस मौसम, उस जगह की याद दिलाती है, जहां पहाड़ों को छूते बादल बड़े-बड़े किनारों के पेड़ वहां की शोभा को बढ़ा रहे थे।

✍ विकाश बैरवा, कक्षा 10



अक्षिता



ज्योति



हरिओम बैरवा



सीमा भाटी



विकास बैरवा



रीना शर्मा



खुशबु यादव



विजय प्रजापत



सीमा भाटी



ज्योति पिंगोलिया



मुस्कान शेख





श्योजीराम



खुशबु यादव



अजय बैरवा



सरोज गुर्जर



अनिशा



खुशबु सैन



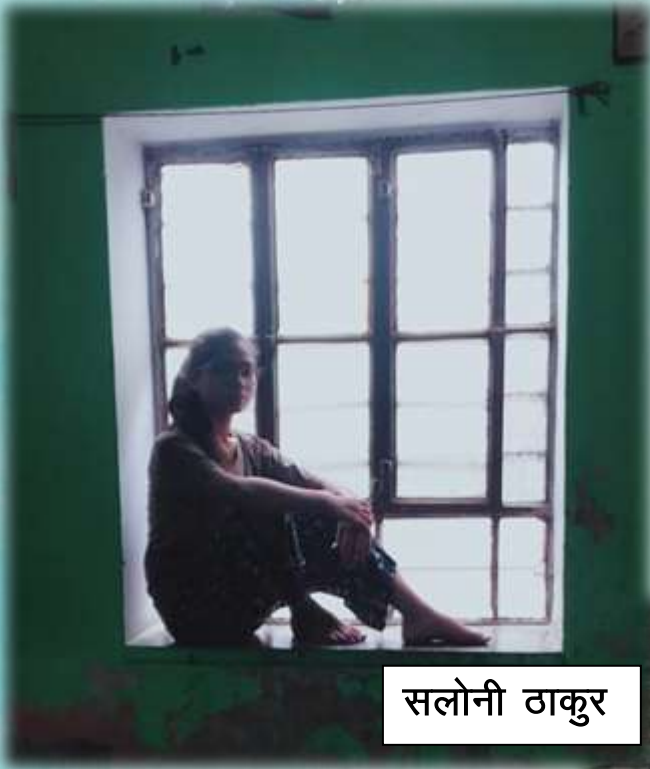
हरिओम बैरवा



सलोनी ठाकुर



खुशबु सैन



सलोनी ठाकुर



नरेंद्र पिंगोलिया

## कोरोना और लॉकडाउन का हमारे जीवन पर प्रभाव

सकारात्मक	नकारात्मक
लॉकडाउन की वजह से चाट के ठेले व गुटखों की दुकाने भी बंद हो गयी जिसकी वजह से लोगों का स्वास्थ्य पर कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ा।	कोविड-19 महामारी के कारण महिलाओं के घरेलू हिंसा के केस काफी बढ़ गये।
कोविड-19 महामारी में कोरोना योद्धाओं ने अपनी जान की परवाह ना करते हुए लोगों के लिए कोरोना वैक्सीन बनाई जोकि कोरोना से लड़ने में प्रभावी है।	कोविड-19 महामारी की वजह से पशु-पक्षियों के लिए दाना-पानी की समस्या हो गई क्योंकि लॉकडाउन के कारण लोग घर से बाहर नहीं निकल पा रहे थे। इसलिए काफी पशु-पक्षी भूख और प्यास के कारण मर गये।
कोविड-19 महामारी के कारण लॉकडाउन लगा जिससे सड़कें खाली और साधनों का चलना बंद हुआ तो वातावरण में प्रदूषण बहुत कम हुआ, जिससे लोगों को शुद्ध हवा प्राप्त हुई।	कोविड-19 महामारी के कारण लोगों का घर से बाहर जाना या कोई भी मेहनत का काम करना बंद हो गया जिसकी वजह से घर के अंदर रहते रहते बच्चों व बड़ों का वजन बढ़ गया। इस वजह से मोटापे के कारण होने वाली बीमारियाँ होने की संभावना बढ़ गई।
अपने परिवार के साथ समय बिताना और बैठकर बातचीत करना।	बच्चों की पढ़ाई सबसे अधिक बाधित हुई। बच्चे बहुत कुछ भूल गए जो उन्हें याद था।
अपने स्वास्थ्य के प्रति लोगों में जागरूकता बढ़ी।	गरीब लोगों का रोजगार छूट जाने से उन्हें अपने व परिवार के भरण-पोषण के लिए काफी संघर्ष करना पड़ा।
अन्य सभी तरह के खर्चे बचे जैसे- बाहर घूमना, शॉपिंग करना, रिश्तों-नातों में आना-जाना आदि।	बेरोजगार हुए मजदूरों को अपने घर वापस जाने के लिए भी बहुत सी परेशानियों का सामना करना पड़ा।
कोविड-19 से बच्चों में खेल के प्रति जागरूकता फैली तथा इसका महत्व समझ आया।	कोरोना के संकट के कारण दोस्तों के साथ मिलकर नहीं खेल सकते थे।
कोविड-19 में लोगों ने मोहल्लों की सफाई की तथा स्वच्छता के बारे में बच्चों सहित सभी को समझाया।	कोविड-19 के कारण लोगों में कोरोना का डर था कि हमें सार्वजनिक स्थानों की सफाई करने के दौरान कोरोना न हो जाए।
घर रहकर हमने घर के कार्यों में सहायता की तथा खाना बनाने की अलग-अलग रेसिपी सीखी।	कालाबाजारी और जमाखोरी के कारण जरूरी सामानों के दाम में काफी बढ़ोतरी हुई।

## दूसरे अंक के प्रसारित होने के साथ बच्चों व सहयोगी संस्थाओं की प्रतिक्रियाएं

- ☺ बहुत ही अच्छी कहानियां और कविताएं हैं, सभी साथियों ने बहुत ही अच्छे तरीके से किताब के रूप में ढाला है।..... गौरी सोनी
- ☺ बहुत अच्छी कविताएं लिखी हैं बच्चों ने और यह किताब बहुत अच्छी है। ..... संजीता प्रजापत
- ☺ धन्यवाद मैम और सर, बहुत ही अच्छी किताब है और तस्वीरें भी बहुत अच्छी हैं। ..... टीना वर्मा
- ☺ बहुत अच्छी किताब बनाई है, आप सभी को धन्यवाद कि हमें यह मौका दिया और आशा है कि आगे भी हम सभी को ऐसा मौका मिलता रहे, और हमारा भी पूर्ण प्रयास रहेगा कि इस कार्यशाला को आगे ले जाएं। ..... संतोष कुमार
- ☺ आप सभी को धन्यवाद बोलना चाहती हूं और आशा करती हूं कि आपका साथ हमें आगे भी मिलता रहे। आप से मिल कर बहुत अच्छा लगा, आपके द्वारा पढ़ाया गया हमें आगे आने वाले समय में बहुत मददगार रहेगा। आपने हमारी कला को सभी के सामने रखा, इससे हमारा आत्मविश्वास बढ़ा है। .. ..... रूकसाना बानो
- ☺ मैं तबीनाह मैम, विजय गोयल सर एवं दशम एलाइंस और हमारी संस्था को तहे दिल से शुक्रिया करती हूं। पहले मैं खुद कविता और कहानी की रचना करती थी लेकिन मुझे कोई प्लेटफार्म नहीं मिला जहां मैं अपनी लिखी गई रचनाओं का प्रकाशन कर सकूं। इस वजह से मेरा आत्मविश्वास भी कमजोर हो रहा था। लेखन के प्रति मेरी रूचि भी कम होती जा रही थी। जब से मैं विजुअल स्टोरी टेलिंग समूह से जुड़ी मुझे बहुत बड़ा प्लेटफार्म मिला। ऑनलाइन कार्यशाला का आयोजन किया गया जिससे हमें लेखिका बनने का अवसर मिला।
- ☺ सरोज गुर्जर, आशा कुमारी, तनु भास्कर, अशोक, इन सभी और बाकी बच्चों ने भी तबीनाह मैम, विजय गोयल, तरूणा मैम, कौमुदी मैम, दशम एलाइंस और यूनिसेफ को धन्यवाद कहा।
- ☺ अन्य संस्थाओं द्वारा टेलीफोनिक माध्यम से बधाई और सुझाव दिए गए कार्यशाला को सफल बनाने के लिए सभी संस्थाओं को दशम एलाइंस की ओर से धन्यवाद।

## प्रतिभागी बच्चों की सूची

क्र.स.	नाम	संस्था का नाम
1	सीमा भाटी	दूसरा दशक बाली
2	प्रीति रावल	दूसरा दशक बाली
3	यशपाल कुमावत	दूसरा दशक बाली
4	ईशान रावल	दूसरा दशक बाली
5	रेणूका भाटी	दूसरा दशक बाली
6	विकास बैरवा	दूसरा दशक बस्सी
7	खुशबु सैन	दूसरा दशक बस्सी
8	विजय प्रजापत	दूसरा दशक बस्सी
9	अजय बैरवा	दूसरा दशक बस्सी
10	दिनेश बैरवा	दूसरा दशक बस्सी
11	शयोजीराम बैरवा	दूसरा दशक बस्सी
12	ज्योति पिंगोलिया	दूसरा दशक बस्सी
13	रीना शर्मा	दूसरा दशक बस्सी
14	नरेन्द्र पिंगोलिया	दूसरा दशक बस्सी
15	प्रभजय नागरवाल	दूसरा दशक बस्सी
16	विकास बैरवा	दूसरा दशक बस्सी
17	अंकित सैन	दूसरा दशक बस्सी
18	अभिषेक सैन	दूसरा दशक बस्सी
19	रोहित बैरवा	दूसरा दशक बस्सी
20	अंकेश वर्मा	भंवरगढ़
21	विकास वर्मा	भंवरगढ़
22	अशोक वर्मा	भंवरगढ़
23	मनोज वर्मा	भंवरगढ़
24	दौलतराम	भंवरगढ़
25	देवांशु सहरिया	भंवरगढ़
26	सलोनी ठाकुर	भंवरगढ़
27	पूजा कुमारी	दूसरा दशक देसूरी
28	रविना कुमारी	दूसरा दशक देसूरी
29	रंजन कुमारी	दूसरा दशक देसूरी
30	पवनी कुमारी	दूसरा दशक देसूरी
31	गायत्री	दूसरा दशक देसूरी
32	मुस्कान शेख	ग्रामीण मानव कल्याण शिक्षण संस्थान, काचरोदा
33	इरफान शेख	ग्रामीण मानव कल्याण शिक्षण संस्थान, काचरोदा
34	हर्षिता मीणा	ग्रामीण मानव कल्याण शिक्षण संस्थान, काचरोदा
35	हिमांशु तंवर	ग्रामीण मानव कल्याण शिक्षण संस्थान, काचरोदा
36	रोहन प्रजापत	ग्रामीण मानव कल्याण शिक्षण संस्थान, काचरोदा
37	हरि सिंह	ग्रामीण मानव कल्याण शिक्षण संस्थान, काचरोदा
38	अक्षिता	आर.आई.एच.आर.
39	निवेदिता	आर.आई.एच.आर.
40	खुशबु यादव	आर.आई.एच.आर.
41	नगीना यादव	आर.आई.एच.आर.
42	अनीशा	आर.आई.एच.आर.



## कार्यशाला में जुड़ी सहयोगी संस्थाओं का परिचय

### दूसरा दशक परियोजना

2000 में सुप्रसिद्ध शिक्षाविद व पद्मभूषण स्व. श्री अनिल बोर्दिया व कुछ अन्य प्रतिष्ठित शिक्षाविदों ने मिल कर फाउंडेशन फॉर एज्यूकेशन एंड डवलपमेंट (FED) ट्रस्ट की स्थापना की थी। इस ट्रस्ट के तहत 2001 में ही राजस्थान में दूसरा दशक परियोजना शुरू की गई थी। दूसरा दशक की शुरूआत दो जिलों के 2 ब्लॉक से की गयी थी और वर्तमान में 7 जिलों में कार्य विस्तार के साथ यह संख्या 9 ब्लॉक तक पहुंच गई है।

### दूसरा दशक बाली

दूसरा दशक बाली 2003 से कार्यरत है। इससे 2015 से 2018 के बीच 21 पंचायतों के 7000 बच्चे जुड़े। इसके माध्यम से कोरोना काल के दौरान 258 बच्चों के साथ लर्निंग सेन्टर द्वारा शिक्षा सम्बन्धी गतिविधियां करवाई गयी और 20 लाख का राशन किट वितरित किया गया। इन गतिविधियों को आगे भी जारी रखते हुए लॉकडाउन के उपरांत बच्चों के साथ एक दिन की "मस्ती की पाठशाला" कार्यशाला का आयोजन किया गया।

### दूसरा दशक भंवरगढ़

दूसरा दशक, भंवरगढ़ शिक्षा के क्षेत्र में लगातार कार्यरत रहा है। लॉकडाउन के चलते संस्था द्वारा अपने क्षेत्र में 5 पंचायतों का सर्वे किया गया इस सर्वे में हर समुदाय के लोगों को सम्मिलित किया गया। इस प्रक्रिया में 1 से 8 तक के स्कूली बच्चों की शैक्षिक स्थिति का सर्वे किया गया। दूसरा दशक के हर ब्लॉक से यह सर्वे किया गया।

### दूसरा दशक बस्सी

दूसरा दशक बस्सी ब्लॉक में जनवरी 2007 से कार्य कर रहा है। निरक्षर व ड्रॉपआउट किशोर-किशोरियों के लिए आवासीय शिविर लगाकर उन्हें पढ़ना-लिखना व संवैधानिक मूल्यों के साथ जीवन जीना सीखाते हैं। 18 वर्ष से अधिक उम्र के किशोर-किशोरियों को आजीविका प्रशिक्षणों से जोड़कर उनको आत्मनिर्भर व रोजगार से जोड़ा जाता है। दूसरा दशक बस्सी 26 ग्राम पंचायतों के 95 गांवों में कार्य कर रहा है। चार माही आवासीय शिविर व जीवन कौशल शिक्षा प्रशिक्षणों से 4650 सहभागियों को प्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुये हैं। कोविड-19 की पहली, दूसरी लहर में आईटीसी के सहयोग से बच्चों को पोषण सामग्री व पेय पदार्थों से 12000 बच्चों को लाभान्वित करने में सहयोग किया है।

### दूसरा दशक देसूरी

देसूरी ब्लॉक में दूसरा दशक परियोजना 2007 से कार्य कर रही है। देसूरी ब्लॉक में वर्तमान में हम 10 गावों में काम कर रहे हैं। ब्लॉक में 2 इखवेलो सेन्टर चल रहे हैं। जिसमें प्रत्येक केन्द्र पर 25-30 बच्चों के साथ रचनात्मक गतिविधियां, कोविड-19 के दौरान जागरूकता अभियान, खेल संबंधी गतिविधियां, बच्चों को स्टेट ओपन की तैयारी कराना, वाद-विवाद प्रतियोगिता व समय-समय पर सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करवाये जाते हैं।

### ग्रामीण मानव कल्याण शिक्षण संस्थान

ग्रामीण मानव कल्याण शिक्षण संस्थान मानव समाज विषयक उद्देश्य विशेष के लिए गठित स्वैच्छिक संगठन है, जो वृहत स्तर पर ग्रामीण समुदाय के साथ उनके सामाजिक सशक्तिकरण एवं आजीविका संवर्धन के लिए कार्य कर रहा है। यह संस्था विविध और व्यापक स्तर पर स्वास्थ्य शिक्षा, श्रमिक शिक्षा, पर्यावरण संरक्षण, महिला सशक्तिकरण, सामाजिक मुद्दे आदि पर सन 2001 से कार्यक्रम संचालित कर रहा है। वर्तमान में संस्था जयपुर जिले के सांभर लेक, दूदू पंचायत समिति के गांवों में कार्यरत है। ग्रामीण मानव कल्याण शिक्षण संस्था का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों के सामाजिक जीवन में शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, पेयजल एवं रोजगार के विकल्पों को उपलब्ध कराना है।



## राजस्थान बाल अधिकार संरक्षण साझा अभियान की पहल “दशम एलाइंस”

रिसोर्स इन्स्टीट्यूट फॉर ह्यूमन राइट्स, राजस्थान  
932, किसान मार्ग, बरकत नगर, टोंक रोड, जयपुर  
Email ID - rihr.rajasthan@gmail.com  
सम्पर्क-0141-3532799, 9460387130, 7878055137